North Asian International Research Journal of Social Science & Humanities

IRJIF I.F. : 5.010

ISSN: 2454-9827 Vol. 6, Issue- 8 August-2020

Index Copernicus Value: 57.07 DOI NUMBER: 10.6947/2454-9827.2020.00009.9 Citation Index

A Peer Reviewed Refereed Journal

मालवा की लौकिक वास्तुकला

– शोधार्थी

डॉ. मंजू यादव (रिसर्च फैलो)

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ

1, उदयन मार्ग, उज्जैन (म.प्र.)

वास्तुकला के क्षेत्र में प्राचीन मालवा ने प्रागैतिहासिक काल से लेकर परमारकाल तक कई पुरातात्विक प्रमाण है जिनके अवशेष वर्तमान में न्यूनाधिक रूप में सुरक्षित है।

'वास्तु' शब्द की व्युत्पत्ति 'वस्' धातु से हुई है जिसका अर्थ 'निवास करना' होता है किन्तु 'वास्तुकला' शब्द व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होता है, जिसमें गृह, वाटिका, प्रत्येक प्रकार के भवन, तालाब, मंदिर, चैत्य, गुफायें, विहार, स्तम्भ आदि सभी के निर्माण की कला का समावेश होता है। मालवा की वास्तुकला का सम्पूर्ण भारत में महत्वपूर्ण स्थान है। वास्तुशैली को दो भागों में बाँटा गया – (1) धार्मिक वास्तु (2) लौकिक वास्तु। धार्मिक वास्तु के अंतर्गत स्तूप, गुहा, चैत्य, मंदिर, स्तम्भ आदि कलाओं का उल्लेख होता है। लौकिक वास्तु कला के अंतर्गत राजभवन, दुर्ग, सार्वजनिक आवास, उपवन, जलाश्य आदि।

राजप्रसादों एवं नागरिकों के आवासों के साक्ष्य के रूप में नहीं है किन्तु इनके निर्माणों की कुछ जानकारी हमें कालिदास की कृतियों, शुद्रक कृत मृच्छकटिक नाटक 'बृहत्संहिता' तथा बाणभट्ट की कृतियों से प्राप्त होती है। साहित्यों के साथ–साथ अभिलेखों की सहायता से लौकिक वास्तु की जानकारी प्राप्त होती है।

(1) दुर्ग तथा नगर :

प्राचीन काल में दुर्ग को राज्य का अंग माना जाता था। राजा अपने परिवार एवं राजकीय सम्पत्ति की रक्षा के लिए प्राचीर (दीवारों) एवं द्वार से युक्त दुर्ग कराते थे। एरण के नगर से दुर्ग के अवशेष प्राप्त हुए है, जिससे जानकारी मिलती है आरम्भ में एरण नगर को वीणा नदी के तट पर बसाया गया था। यह दुर्ग चारों तरफ से नदियों से घिरा हुआ था।

प्राचीन काल में नगरों के निर्माण के लिए नदियों के संगम अथवा पर्वत के किनारों को उपयुक्त स्थल मानते थे। ब्रह्मपुराण के अनुसार उज्जयिनी (अवन्ति) नामक नगर को प्राकार, तोरण तथा परिखा आदि से परिवेष्टित किया जाता था। अर्थशास्त्र में भी नदी, जल, पर्वत आदि नगर की सुरक्षा के प्राकृतिक साधन तथा बाह्य सुरक्षा रूपी कृत्रिम साधनों का उल्लेख मिलता है। उदाहरणार्थ, उज्जयिनी नगर क्षिप्रा तट पर, विदिशा बेगवती (बेस) नदियों के संगम पर, मन्दसौर (दशपुर) शिवना नदी के तट पर स्थित थे।

(2) राजप्रासाद :

राजप्रासाद का निर्माण नगर के मध्य भाग में करना महत्वपूर्ण माना जाता था क्योंकि यहह सम्पूर्ण नगर का केन्द्र बिन्दु होता था। इनको विभिन्न शब्दों से जाना जाता था जैसे – राजगृह, प्रासाद, राजवेरम, राजभवन, राजगृह तथा राजनिवेशय आदि।

राजप्रासाद दो भागों में विभक्त होता था। भीतरी भाग को अंतःपुर (हरम) होता था जहाँ रानियों, महारानियों के निवास स्थान होते थे दूसरा एवं बाहरी भाग आँगन सभागृह, चित्रशाला, संगीतशाला, यज्ञशाला, पशुशाला तथा कारागृह आदि का निर्माण किया जाता था।

राजप्रासाद के भीतर राजा और रानियों का व्यक्तिगत निवास स्थान को धवलगृह के नाम से जाना जाता है। 'उज्जयिनी का राजकुल (राज–प्रासाद) मुख्यतः सात कक्षाओं (चौकों) का बना होता था। सभी भवनों पर जाने के लिए सीढ़ियों का निर्माण किया जाता था।

(3) **अन्य भवन** :

कालिदास में उज्जयिनी के ऊँचे राजप्रासाद का उल्लेख सौंध और हर्म्य के नाम से मिलता है। आदर्श नागरिक शाला को 'द्विवासगृह' कहा जाता था। भवनों के सौन्दर्य वृद्धि के लिए ध्वज, पताका का केतु लगाने का उल्लेख मिलता है। मंदसौर प्रशस्ति से विदित होता है कि दशपुर (पश्चिमी मालवा) के भवनों के ऊपर झण्डे लगाये जाते थे। भवनों में प्रकाश के लिए खिड़कियों (वातायनों) का निर्माण किया जाता था। 'मृच्छकटिक' और 'कादम्बरी' के नाटकीय लेखकों ने कपाटयुक्त वातायनों के निर्माण की चर्चा की है। अतः विवेच्ययुगीन अभिलेखों से यह ज्ञात होता है कि दशपुर नगर (मंदसौर) के भवन एक ही पंक्ति में बने होते थे, जिन्हें देखकर यह प्रतीत होता था कि पृथ्वी के गर्भ से एक ही साथ ऊपर निकले हो।

(4) **जलाशय तथा उद्यान, उपवन** : राजप्रासाद और गृह–प्रांगण में उद्यान (वृक्षवाटिका) लगाई जाती थी। गृह–उद्यान में छोटे–छोटे जलाश्य भी बनाये जाते थे। 'कादम्बरी' में बाण ने उज्जयिनी के भवनों से संलग्न उद्यान, गृह दीर्घिका कदाचित एक लम्बा संकीर्ण जलाश्य था और वापी चतुष्कोण जलाशय होता था। मालवा से प्राप्त कुमार गुप्त, बंधुवर्मन प्रभाकर, गौरी तथा विश्ववर्मन के अभिलेखों से ज्ञात होता है कि गांधार नगर में जलाश्यों तथा उद्यानों के बनवाने का उल्लेख मिलता है।

बाण, कालिदास तथा शुद्रक की कृतियों तथा विभिन्न अभिलेखों से ज्ञात होता है कि दशपुर (मंदसौर) तथा उज्जयिनी के नगर मालवा के गौरवशाली नगर थे उनमें बड़े–बडे महान मंदिर, उद्यान तथा जलाशय बने थे और उनका अलंकरण बड़ी कुशलतापूर्वक किया गया था।

अतः मालवा की वास्तु कृतियाँ यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर एवं कलात्मक प्रगति के परिचायक है।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. वासुदेव उपाध्याय, प्राचीन भारतीय स्तूप, गुहा एवं मंदिर.
2. मार्शल, ए गाइड टू साँची.
3. कृष्णदत्त वाजपेयी, भारतीय वास्तुकला का इतिहास
4. जगदीशचन्द्र चतुर्वेदी, मध्यप्रदेश के कला मण्डप

5. कैलाशचन्द्र जैन, मालवा थ्रू दि एजेज.

6. कमलकांत शुक्ल, प्राचीन मालवा का ऐतिहासिक एवं कलागत अध्ययन, 1998.